ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 165-168

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महात्मा गाँधी का दर्शन एवं नई तालीम की उपादेयता

1. अनिल कुमार
2. प्रो0 (डॉ0) आदित्य नारायण त्रिपाठी

1. शोध अध्येता– शिक्षाशास्त्र, डॉ0 रा0म0 लो0 अवध पि0 चित्र अयोध्या, 2. शोध–निर्देशक– प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र विभाग, संत तुलसीदास पी0 जी0 कॉलेज, कादीपुर सुलतानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-10.11.2022, Revised-16.11.2022, Accepted-20.11.2022 E-mail: drskpandeysln@gmail.com

सारांशः– *"गांधी जी का दर्शन सरल एवं गम्भीर, सीधे एवं सूक्ष्म, स्पष्ट एवं उलझे हुए एक साथ दिखाई देते हैं। इनके दर्शन के विषय में संक्षेप में कहना सरल नहीं है। गांधी जी के सत्य के प्रयोगों से उनके विचारों में संवर्धन एवं परिवर्तन होता गया। गांधी जी की लिखी एवं कही बातों के विशाल समूह तथा तीन महाद्वीपों में ऑधी शताब्दी से ज्यादा समय के उनके कार्यो के बीच में उनके विचारों की छानबीन करना और निष्कर्ष निकालना एक कठिन कार्य है। इन सभी के बावजूद गांधी जी की विचारधारा को थोड़ा–बहुत रूपरेखा देने की कोशिश की जा सकती है। अपने सम्पूर्ण दर्शन को व्यक्त करने हेतु गांधी जी 'सर्वोदय' शब्द का प्रयोग करते थे। सर्वोदय की शिक्षाओं को मूलतः तीन सिद्धान्तों में समन्वित किया जा सकता है–*

1. व्यक्ति का हित सबके हित में निहित हैं।

2. काम द्वारा आजीविका प्राप्त करने का सवाल हो तो, नाई के काम का मूल्य नही होगा, जो वकील के काम का है।

3. कृषक अथवा कारीगर का जीवन ही वास्तविक जीवन है।

कुंजीभूत शब्द–विचारों में संवर्धन, परिवर्धन, महाद्वीपों, विचारधारा, रूपरेखा, सर्वोदय, समन्वित, आजीविका, चिन्तन।

गांधी जी का सत्य– अहिंसा के प्रति निष्ठा इस बात की गारन्टी थी कि किसी भी परिकल्पना की पूर्ति के लिए व्यक्ति पर सिवा नैतिक दबाव के अन्य कोई दबाव नहीं डाला जा सकता। वास्तव में, गांधी जी के चिन्तन के अनुसार 'सर्व' का हित भी व्यक्ति द्वारा ही प्राप्त हो सकेगा। जब व्यक्ति 'सबके सर्वाधिक हित' के लिए प्रयत्नशील होगा। गांधी जी के लिए 'सर्व' किसी दल या राज्य में समाहित होने वाली परिकल्पना न होकर 'सर्व' का वास्तविक अर्थ समाज मे रहने वाले व्यक्तियो का सामूहिक, जोड़ और सभी का हित था।

प्रत्येक व्यक्ति का हित। गांधी जी जनता को जगाना चाहते थे। राज्य शक्ति के विकल्प में लोक शक्ति खड़ी करना चाहते थे। उनमें मौलिक प्रतिभा थी। गांधी जी हर कामकाजी व्यक्ति को सम्मान देने के पक्षधर थे। वे नहीं चाहते थे कि काम करने वाले व्यक्ति को एक व्यापारिक वस्तु के रूप में देखा जाय, बल्कि इसके विपरीत उसे मानव समझा जाय, जिसकी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताएँ वही है जो पार्टी के नेताओं, अफसरों, व्यवरथाओं, वैज्ञानिकों और कलाकारों की है।

गाँधी जी ने स्वयं "सर्वोदय–पद्धति" का अभिनव प्रयोग आजादी की लड़ाई में किया। अधिक दिनों तक जीवित रहे होते तो आजादी के बाद भी राष्ट्र निर्माण में सर्वोदय के रास्ते पर लोंगों को आगे बढ़ाये होते व सर्वोदय का विकास करके 'समाज–परिवर्तन' का दायित्व भी निभाये होते।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धी विचार/दर्षन को नई तालीम और 'वर्धा शिक्षा योजना' के नाम से भी पुकारा जाता है। गाँधी जी उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ महान समाज–सुधारक भी थे। गाँधी जी ने 'हरिजन' नामक समाचार पत्र के माध्यम से अपने शिक्षा सम्बंधी विचारों को जन साधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया। गाँधी जी के शिक्षा सम्बंधी विचारों से देश में उथल–पुथल मच गई। सन् 1937 में गाँधी जी वर्धा के मारवाड़ी हाईस्कूल में 12 व 13 अक्टूबर को रजत जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ था, इसी अवसर पर गाँधी जी की अध्यक्षता में "अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन" का आयोजन हुआ। इसी सम्मेलन को वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहा जाता है। इसी सम्मेलन में गाँधी जी ने 'बेसिक शिक्षा' की अपनी नवीन योजना प्रस्तुत की।

इस शोध–पत्र के द्वारा–

1. भारतीय संस्कृति का विषद ज्ञान प्रदान करना।
2. सर्वोदय समाज की स्थापना एवं उसके उद्देष्य से अवगत कराना।
3. नैतिक प्रशिक्षण का विकास करना।
4. महात्मा गाँधी के दर्षन एवं विचारों से लोगों को अवगत कराना है।

नई तालीम के विषय में महात्मा गाँधी ने लिखा है कि 'हमारी बुनियादी शिक्षा–पद्धति मस्तिष्क, शरीर और आत्मा तीनों का विकास करती है, जबकि साधारण शिक्षा पद्धति केवल मस्तिष्क के विकास पर ही बल देती है। नई तालीम सूत कातने और झाड़ू लगा देने तक ही सीमित नही है । कितना भी आवश्यक ही क्यों न हो, यदि इनमें उक्त तीनों शक्तियों का सामन्जस्य

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

युक्त विकास नहीं होता तो इसका कोई मूल्य ही नहीं।"

शिक्षा का अर्थ– शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने लिखा है, 'शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य में शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता को बाहर निकालकर सर्वांगीण विकास करना है। अन्त में, बच्चों की शिक्षा ऐसे एक उपयोगी हस्तशिल्प सिखाकर तथा जिस समय से वह अपनी शिक्षा आरम्भ करता है, उसी समय से उसे उत्पादन करने के सुयोग्य बनाकर आरम्भ करना चाहूँगा।' नई तालीम और शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करने के पश्चात् गाँधी जी ने नई तालीम के बुनियादी सिद्धांतों को इस प्रकार स्पष्ट किया था–

1. पूरी शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिए। अर्थात अंत मे पूँजी को छोड़कर अपना सारा खर्च उसे स्वयं निकलाना चाहिए।
2. औपचारिक शिक्षा के अन्त तक हाथ का पूरा–पूरा उपयोग किया जाये। अर्थात विद्यार्थी अपने हाथों से कोई–ना –कोई उद्योग–धंधा आखिरी दर्जे तक करे।
3. यह तालीम विद्यार्थी की प्रान्तीय भाषा के माध्यम से दी जानी चाहिये।
4. इसमें साम्प्रदायिक, धार्मिक शिक्षा के लिये कोई जगह नहीं होगी। लेकिन बुनियादी, नैतिक तालीम के लिये काफी गुंजाइश होगी।
5. यह तालीम, बच्चे ले या बड़े, स्त्रियाँ ले या पुरुष विद्यार्थियों के घरों में पहुँचेगी।
6. चूँकि इस तालीम को पाने वाले लाखों–करोड़ों विद्यार्थी अपने–आपको सम्पूर्ण भारत के नागरिक समझेगें, इसलिये इन्हें अन्तः प्रान्तीय भाषा सीखनी होगी।

नई तालीम की रूपरेखा इस प्रकार है–

1. बेसिक शिक्षा के पाठ्यकम की अवधि सात वर्ष की है।
2. यह शिक्षा 7 से 14 वर्ष तक के बालकों एवं बालिकाओं के लिये निःशुल्क रूप से अनिवार्य है।
3. शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा है। अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है।
4. सम्पूर्ण शिक्षा का सम्बन्ध किसी आधारभूत शिल्प से होता है।
5. शारीरिक श्रम पर बल दिया जाता है, जिससे औपचारिक षिक्षा पष्चात् बालक सीखी हुई शिक्षा से अपनी जीविका चला सके।
6. शिक्षा का बालक के जीवन, गृह और गांव से और उसके ग्राम के उद्योगों हस्त शिल्पों और व्यवसायों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
7. बालको द्वारा बनायी जाने वाली वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है। अथवा जिनको इसे बेचकर विद्यालय का कुछ व्यय चलाया जा सकता है।

नई तालीम का पाठ्यक्रम– नई तालीम के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय निर्धारित किये गये हैं।

1. आधारभूत शिल्प– आधारभूत शिल्पों में से कोई एक शिल्प–

(क) कृषि (ख) कताई–बुनाई, (ग) लकड़ी का काम (घ) मिट्टी का काम (ड़) चमड़ें का काम (च) मछली पालन (छ) फल एवं षाक उद्यान–कर्म (ज) बालिकाओं के लिये गृह विज्ञान (झ) कोई अन्य शिल्प (स्थानीय एवं भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल)।

2. मातृभाषा
3. गणित
4. सामाजिक अध्ययन–इतिहास,भूगोल एवं नागरिकषास्त्र।
5. सामान्य विज्ञान

(क) प्रकृति अध्ययन (ख) वनस्पति– शास्त्र (ग) प्राणिशास्त्र (घ)रसायनशास्त्र अध्ययन (ड़) स्वास्थ्य विज्ञान (च) नक्षत्रों का ज्ञान (छ) महान वैज्ञानिकों एवं अन्वेषकों की कहानियां।

6 कला रेखा चित्रण एवं संगीत आदि।
7. हिन्दी (जहाँ यह मातृभाषा नहीं है)।
8 शारीरिक शिक्षा व्यायाम एवं खेलकूद ।

नई तालीम या बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत –

बुनियादी शिक्षा निम्नांकित सिद्धान्तों पर आधारित है :

1. जन साधारण को शिक्षित करने का सिद्धान्त।
2. निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा द्वारा बच्चों को शिक्षित करने का सिद्धांत।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

3. स्वावलम्बी बनने की शिक्षा ।
4. सामाजिक जीवन जीने का प्रशिक्षण।
5. शिक्षा का माध्यम– मातृभाषा ।
6. हस्तशिल्प का केन्द्रीय स्थान ।
7. शारीरिक श्रम का महत्वपूर्ण स्थान– गाँधी जी के शब्दों में, "बालक के शरीर के अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग उसके मस्तिष्क को विकसित करने की सर्वोत्तम और शीघ्रतम विधि है ।"

नई तालीम की विशेषताएँ– अविनाश लिंगम ने बुनियादी शिक्षा को महात्मा गाँधी की महानतम भेंट बताया है। इसका कारण यह है कि इसमें अनेक अद्वितीय विशेषताए है, जैसे–

1 क्रिया प्रधान शिक्षा– बुनियादी शिक्षा क्रिया–कलाप प्रधान है। रायवर्न ने लिखा है– "बालक हस्तशिल्प के क्षेत्र में सक्रिय रहकर मानसिक अनुभवों के साथ–साथ अन्य प्रकार के अनुभव भी प्राप्त करता है।"

2. बालक प्रधान शिक्षा– इस योजना में बालक को शिक्षा का ग्राहक समझा जाता है तथा उसकी मूलभूत आवश्यकता का अध्ययन किया जाता है।

3. बालक का आध्यात्मिक विकास– यह शिक्षा बालक की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करती है। इस प्रकार यह शिक्षा बालक को अपने और सामाजिक जीवन की पूर्णता के मान का अनुभव कराती है।

4. गृह–स्कूल व समाज में सामन्जस्य– नई तालीम, गृह–स्कूल और समाज के जीवन में पूर्ण सामन्जस्य स्थापित करती है। रायवर्न ने लिखा है, 'बालक हस्त शिल्प की शिक्षा प्राप्त करके अपने गृह स्कूल और समाज में प्रायः सामान्य व्यहार कर पाता है।'

5. सामाजिक आधार– बुनियादी शिक्षा का आधार सामाजिक है, क्योंकि इसमें बालक के अनेक सामाजिक गुणों को विकसित करने की चेष्टा की जाती है।

6. मनोवैज्ञानिक आधार – नई तालीम का आधार मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें बालक को प्रधानता दी जाती है, न कि उसके द्वारा अध्ययन किये जाने वाले पाठ्य विषयों को इस तथ्य को ध्यान में रखकर नई तालीम में उत्पादक कार्य को प्रधान स्थान दिया गया है।

7. शारीरिक श्रम का सम्मान– नई तालीम बालक में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान की भावना का निर्माण करती है। इसमें व्यक्ति आदर के साथ देखा जाता है।

8. आर्थिक आधार– बुनियादी शिक्षा में बालकों द्वारा बनायी जाने वाली वस्तुओं को बेचकर विद्यालय का खर्च /व्यय चलाया जाता है तथा बालक हस्तशिल्प सीखकर अपने भावी जीवन में धन का अर्जन करते हैं?

9. समवायी शिक्षण–विधि – बालक को समस्त विषयों की शिक्षा किसी हस्त शिल्प के माध्यम से दी जाती है। वह कृषि, कताई, बुनाई, कला आदि में से किसी एक हस्तशिल्प को चुनता है।

10. बालक व शिक्षक की स्वतंत्रता– नई तालीम में बालक व शिक्षक पर्याप्त स्वतंत्रता का उपभोग करते है। बालक को कार्य करने में रूचि लेने का पूर्ण अवसर मिलता है। शिक्षक अपनी इच्छानुसार प्रयोग व परीक्षण करता है, इसे किसी पुस्तक को पूरा करने की आतुरता नहीं रहती ।

नई तालीम की वर्तमान उपादेयता– राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भले ही आज से लगभग आठ दशक पूर्व प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में अपने विचार प्रस्तुत किये हो, किंतु उनकी दूरदर्शिता का प्रभाव आज की शिक्षा व्यवस्था में भी देखा जा सकता है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की झलक वर्तमान समय में फाउण्डेशन स्कूलों के रूप में देखी जा सकती है, जिसकी लोकप्रियता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। गाँधी जी ने नई तालीम द्वारा जो निःशुल्क एवं सार्वभौमिक शिक्षा की बात कही थी, उसका अनुपालन आज के समय में भी किया जा रहा है तथा देश के सभी परिषदीय विद्यालयों में आज भी निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जा रही है। नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर गाँधी जी का विशेष जोर था, जिसका अनुपालन वर्तमान समय में समस्त शिक्षण संस्थाओं में किया जा रहा है। गांधी जी ने शिक्षा के व्यवसायिक पक्ष पर जोर दिया, जिसे लागू करने का प्रयास आज के पाठ्यक्रम निर्माता भी कर रहे है। बचपन के बारे में उनके सरोकार का केन्द्र बिन्दु बच्चों का मूलभाव स्वभाव था कि यह कैसे सीखते है? और उनकी बुनियादी आवश्यकताएं क्या है? यह सभी मिलाकर आज की सम सामाजिक बाल केन्द्रित शिक्षा का निर्माण करते है। सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में शिल्प को दिया गया महत्व और श्रम को महत्व देने वाले नजरिये के निर्माण को प्रशिक्षको द्वारा आज भी महत्व दिया जाता है। वास्तव में, सामजिक रूप से उपयोगी और उत्पादक कार्य, जो स्कूल पाठ्यकम का एक हिस्सा है। उनमें इन उद्देश्यों को संक्षेप में शामिल किया गया है। शिक्षा खासतौर पर, सबसे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों का चहुमुखी विकास करना है। गांधी जी बच्चों की नैसर्गिक अच्छाईयों में यकीन रखते थे। चीजों को करके सीखने पर जोर देते थे। गाँधी जी चाहते थे कि बच्चों की शिक्षा प्राकृतिक परिवेश में दी जानी चाहिये और वह मानते थे कि बच्चों की शिक्षा स्वतंत्रता के माहौल में दी जाये ।

हमारे देश में वर्तमान शिक्षा सक्रिय है वह कहीं न कहीं अनुपयोगी एवं कौशल विमुक्त है, जिससे विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी किसी काम को करने के योग्य नहीं है। गाँधी जी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना ही उचित प्रतीत हो रहा है, क्योकि वर्तमान शिक्षा बालकों को उनकी क्षमता का विकास करने में सहायक सिद्ध नहीं हो रही है। वह शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी किसी काम को करने के योग्य नहीं हो पा रहा है। अतः बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता विशेष रूप में परिलक्षित होती है। तॉकि बालक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् किसी ना किसी काम के करने योग्य हो जाये, जो उसके आर्थिक विकास एवं राष्ट्र के विकास के लिये महत्त्वपूर्ण हो सके ।

अतः हम यहीं कहेंगे कि शिक्षा की विषय–वस्तु तथा स्कूल कालेजों में शैक्षिक प्रक्रिया परिवर्तनशील कार्य जगत की आवश्यकताओं से पूर्णतया छात्रों में ऐसी योग्यताओं का विकास करना चाहिये कि जो छात्रों को उनके समयाधिक विकास के साथ–साथ उनके सम्पूर्ण विकास हेतु बुनियादी शिक्षा का रूप प्रभावी भूमिका का निर्वाहन करेगा। वर्तमान शिक्षा का लक्ष्य भी कौशल युक्त शिक्षा जो बुनियादी शिक्षा के रास्ते पर चलकर हम पूर्ण कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी लक्ष्य की प्राप्ति का साधन हैं। गांधी जी के अनुसार भू–आन्दोलन केवल भूमिहीनों को भूमि बाँटने का आन्दोलन नहीं है। यह मानव को ऊपर उठाने का एक प्रयोग है। उनके समग्र जीवन–दर्शन की आधारशिला यह है कि हम सब समाज में रहते हैं, इसलिए हमारे पास जो कुछ है, वह समाज का है।

निष्कर्ष– एक शिक्षाशास्त्री के रूप में गाँधी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने दुनिया के अन्य शिक्षाविदों या तत्व चिंतको की भाँति शिक्षा के किसी एक भी उद्देश्य को प्रस्तुत कर आत्म संतोष का अनुभव नहीं किया, बल्कि मानव–जीवन के सभी पहलुओं को स्पष्ट करते हुए अनेक उद्देश्यों को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे सिद्ध करने के लिये हमें सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा की बात की जो अति सामान्य मानव तक पहुँच सकें और उस शिक्षा के द्वारा उसके ह्रदय हाथ तथा मस्तिष्क का परिष्कार और परिमार्जन किया जा सके।

गाँधी जी का अपना एक जीवन–दर्शन था, उनके कुछ सामाजिक सिद्धान्त और राज्य व्यवस्था विषयक उनकी अद्भुत कल्पना थी। आजादी मिलने पर हमें विदेशी लोक कल्याण वादी राज्य अथवा समाजवाद या साम्यवाद की नकल करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। आजादी पश्चात के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उन्होंने इन सबसे अलग नया सर्वोदय का विचार दिया था। हम सभी तरफ से ज्ञानार्जन करें, समाज–विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि में से जो कुछ अच्छा हो, ग्रहण करें। ज्ञान की उपेक्षा नही होनी चाहिए और सत्य की खोज में तत्पर रहना चाहिए। उसकी बुनियादें भारत–भूमि में, भारत के इतिहास में, भारतीय संस्कृति में और भारत की आत्मा में होनी चाहिये। इसीलिए गाँधी जी ने लिखा है– "मैं अपने घर की सभी खिड़कियाँ खुली रखना चाहता हूँ और चारों तरफ की हवा उनमें आ सके, ऐसी मेरी इच्छा है, किन्तु वह हवा ऐसी नहीं होनी चाहिए कि घर को ही उखाड़कर फेंक दे। अतः मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ कि गाँधी शिक्षा आधुनिक संदर्भ में, भारत के ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गाँधी, मोहनदास करमचंद, 2013, मेरे सपनों का भारत, नई दिल्ली, डायमण्ड बुक्स ।
2. डा० ओड़, लक्ष्मी लाल, 2014 शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।
3. शिक्षा सफलता का मंत्र, योजना, नई दिल्ली विशेषांक।
4. योजना, फरवरी, नई दिल्ली, अंक 2.
5. सिंह, डा0 कर्ण– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, गोविन्द प्रकाशन ।
6. शिक्षा सफलता का मंत्र, योजना, नई दिल्ली, विशेषांक।
7. कुमार : कृष्ण : शिक्षा के विषय पर महात्मा गांधी के विचार ।
8. http:11 Laffaj- wordpress-com/ 2016/02/25.
9. जय प्रकाश नारायणः मेरी विचार यात्रा, भाग–1 सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी।

*****